© 2017 IJSRSET | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. नीलाभ तिवारी

सहायक प्राध्यापक, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, श्री सदाशिव परिसर पुरी

राकेश कुमार वर्मा

शोध छात्र, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर

शोधसार :– राष्ट्रीय सेवा योजना युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन स्तर के विधार्थियों के लिए संचालित योजना है जिसका उद्देश्य अध्ययन के साथ–साथ सामाजिक सेवा के कार्यो से जुड़कर स्वयं के व्यक्तित्व का विकास करना होता है इसके अन्तार्गत विधार्थी विभिन्न गतिविधियों से जुड़कर वर्ष में 120 घण्टे का सेवा कार्य करते हैं एवं एक सात दिवसीय विशेष शिविर में किसी गोद ग्राम/बस्ती में रहकर विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते है, जैसे स्वच्छता अभियान, शिक्षा,स्वास्थ्य, जन–जगरूकता हेतु नुक्कड़ नाटक, वृक्षारोपण,पल्स पोलियों अभियान, इस प्रकार की गतिविधियों से जुड़कर विघार्थी स्वयं को समझता है एवं स्वयं के आस–पास के समाज को समझता है साथ ही अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। प्रस्तुत शोध में रा.से.यो. छात्र–छात्राओं एवं गैर रा.से.यो. छात्र–छात्राओं जो इस योजना से जुड़कर कार्य नहीं करते इन दोनों के व्यक्तित्व का तुलनात्म क अध्ययन किया गया है। शोध हेतु वर्ष 2018–19 में अध्ययनरत भोपाल एवं सीहोर म.प्र. के 33 रा.से.यो. छात्र–छात्राएं एवं 33 गैर रा.से.यो. छात्र–छात्राओं का अध्ययन किया गया। जिसमें निष्कर्ष में यह ज्ञात हुआ कि रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्र एवं छात्राओं के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। परन्तु रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्रों के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं जबकी बहिर्मुखी व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार रा. से.यो.एवं गैर रा.से.यो. छात्राओं के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द :– नुक्कड़, नाटक, वृक्षारोपण,पल्स, पोलियों, अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी।

प्रस्तावनाः– राष्ट्रीय सेवा योजना का परिचय– स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय शिक्षा व्यवस्था में ऐसी गतिविधियों और कार्यक्रमों के समावेश पर बल दिया जाना आवश्यक था, जिससे शिक्षा को सामाजिक सरोकारों को पर्याप्त स्थान मिल सके। इस दृष्टि से राष्ट्रीय सेवा योजना एक विशेष प्रयास माना जाता है।

- 24 सितम्बर,1969 को तत्कालीन शिक्षामंत्री डॉ. वी.के.आर.वी. राव ने सभी राज्यों को शामिल करते हुए 37 विश्वविद्यालयों में एन.एस.एस. कार्यक्रम आरंभ किया और साथ ही इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों को उनके सहयोग और सहायता का अनुरोध किया।

- विश्वविद्यालय और +2 स्तर के छात्रों द्वारा की गई समुदाय सेवा में विभिन्न पहलू शामिल किए गए हैं जैसे कि गहन विकास कार्य के लिए गांवो और शहरी बस्तियों को अपनाना, चिकित्सा– सामाजिक सर्वेक्षण करना, चिकित्सा केन्द्रों की स्थापना, जन टीकाकरण कार्यक्रम, स्वच्छता, अभियान, समुदाय के कमजोर वर्गो के लिए प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम, रक्तदान, अस्पतालों में रोगियों की सहायता, अनाथालयों और शारीरिक रूप से निःशक्त व्यक्तियों की सहा राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत उददे्श्यों जैसे कि राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक सोहाद्र करने में भी उपयोगी कार्य किया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के मुख्य उददे्श्य– ''समाजसेवा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास''

राष्ट्रीय सेवा योजना के विशिष्ट उददे्श्य निम्न प्रकार हैं–

- जिसमें व्यक्ति कार्य करता है, उस समुदाय को समझना
- किसी समुदाय की आवश्यकता और समस्या को समझना और उनके समाधान के लिए तत्पर होना
- सामाजिक और नागरिक उत्तरदायित्व के भाव के साथ सबका विकास करना
- सामुदायिक समस्याओं के सहायक समाधान को खोजने में अपने ज्ञान का उपयोग करना
- समूह के साथ रहना और उत्तरदायित्व को साझा करने के लिए आत्मक्षमता का विकास करना
- नेतृत्व– गुणवत्ता और प्रजातांत्रिक अभिव्यक्तियों की प्राप्ति करना
- आकस्मिक और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए क्षमता का विकास करना

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्य– '' मैं नही आप (नाहं वै भवान्) ¼Not Me But You½**

राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रेरणा पुरूष– ''स्वामी विवेकानंद''

व्यक्तित्व की अवधारणा

मनोवैज्ञानिकों ने मनोवैज्ञानिक लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है।

मनोविश्लेषणवादी युंग (1921) में व्यक्तियों को अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी इन दो भागों में बांटा।

1. बहिर्मुखी व्यक्तित्व – इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले लोग मिलनसार, दूसरों में रूचि लेने वाले, व्यवहारकुशल, संकोचरहित, वर्तमान को महत्व देने वाले, शीध्र निर्णय लेने वाले तथा वस्तुगत दृष्टिकोण आदि विशेषताओं वाले होते है। ये लोग खुशमिजाज ओर आशीवादी होते है।

2. अन्तर्मुखी – इस प्रकार के व्यक्ति कल्पनाशील, चिन्तनशील, अपने ही विचारों, भावनाओं और आदर्शो में लीन रहने वाले होते है। लोगों से मिलना–जुलना कम पसन्द करते है। एकान्त प्रिय होते है। देर से निर्णय लेना, देर से क्रियान्वित करना, कम बोलना, भविष्य को महत्व देना आदि इनकी प्रमुख विशेषताएं होती है।

युंग के इस सुझाव का पुष्टीकरण आइजेन्क (1947) में किया। बाद में इस वर्गीकरण में एक अन्य प्रकार जोडा गया। वह है उभयमुखी व्यक्तित्व। इनमें अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी दोनों प्रकारों की विशेषताएं पायी जाती हैं। ये कुछ परिस्थितियों में अन्तर्मुखी व्यक्तित्व से संबंधित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं तथा अन्य परिस्थितियों में बहिर्मुखी व्यक्तित्व से संबंधित व्यवहार प्रदर्शित करते है।

शोध की आवश्यकताः– प्रस्तुत विषय में शोध की आवश्यकता का मुख्य कारण यह है कि शिक्षा का उददेश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना होता है एवं इसके लिए विद्यार्थी विभिन्न शैक्षिक प्रक्रियाओं से गुजरता है परन्तु उसके व्यक्तित्व का विकास किस दिशा में हुआ है यह पक्ष महत्वपूर्ण होता हैं क्योंकि भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मन्त्रालय के द्वारा पूरे देश में संचालित रा.से.यो. जिसका उददेश्य भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास समाज सेवा के माध्यम से करना होता है इस योजना से जुड़कर विद्यार्थी अध्ययन के साथ–साथ विभिन्न समाजिक गतिविधियों में भी भाग लेता है एवं अपने आस–पास के सामाजिक परिवेश को समझता है साथ ही अपने अन्दर छिपि प्रतिभा का भी विकास करता है। इसके अलावा एक दूसरे तरफ वो विद्यार्थी होते है जो इस तरह की गतिविधियों में भाग नहीं लेते हैं। प्रस्तुत शोध के अध्ययन की आवश्यकता इसी संदर्भ में है कि राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे किस तरह का अन्तर पाया जाता है। और वास्तव में यह योजना युवा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सहायक है।

शोध उदेश्यः–

1.राष्ट्रीय सेवा योजना एवं गैर राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

2.छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

पारिभाषिकरणः– ''राष्ट्रीय सेवा योजना'' युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु 10+2 एवं महाविद्यालयीन विद्यार्थियों हेतु संचालित योजना।

''व्यक्तित्व'':– व्यक्ति के आन्तरिक एवं बाहरी शील गुणों का संगठन।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः– किसी भी शोध कार्य को करने के लिए उस क्षेत्र में पूर्व में हुए अध्ययनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है, सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से ही शोधकर्ता को अपने शोध के लिए समुचित दिशा मिलती है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र में भी शोधकर्ता द्वारा अपने विषय से सम्बन्धित शोधों का अध्ययन किया गया जिसमें निम्न निष्कर्ष दिए गए।

- हुसैन, (1969), अपने शोध कार्य में निष्कर्ष दिया कि रा.से.यो. राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है यह नागरिकों में परस्पर सहानुभुति रचनात्मकता राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण योजना है।

- श्रीवास्तव (1979), इन्होने रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्रो पर अध्ययन किया निष्कर्ष प्राप्त किया कि इस योजना के प्रभाव से विद्यार्थियों में वार्तालाप की समृद्धि तो प्राप्त होती परन्तु समग्र ज्ञान नहीं होता है।

- लाहोटी सुधा (1996), इन्होने अपने शोध ''राष्ट्रीय सेवा योजना एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' में निम्न निष्कर्ष दिया कि राष्ट्रीय सेवा योजना उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की कक्षा अवकाश एवं समय के सदुपयोग का प्रयास है से योजना के अन्तर्गत आयोजित गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेते है। सामाजिक जागरूकता एवं समकालीन समस्याओं के सामाधान कि दिशा में सहायक होते है।

- Ghorpade, Nitin Laxman. (2016) A study of an Impact of Administration and management of NSS special winter camps in Developing NSS volunteers and Programme officers with special Reference to selected colleges Affiliated to the university of Pune.

प्राक्ल्पनाः–

1. महाविद्यालयीन रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो.छात्र–छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. महाविद्यालयीन रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्र–छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. महाविद्यालयीन रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. बालकों के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. महाविद्यालयीन रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. बालकों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. महाविद्यालयीन रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. बालिकाओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. महाविद्यालयीन रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. बालिकाओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकनः– प्रस्तुत शोध में वर्ष 2018–19 में अध्ययनरत मध्यप्रदेश के भोपाल एवं सीहोर जिले के महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में अध्ययनरत रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. के 33–33 छात्र छात्राओं का अध्ययन किया गया है।

शोधाभिकल्प

प्रकृत शोध हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में शिक्षासत्र–2018–19 के मध्यप्रदेश के भोपाल तथा सीहोर शहर के महाविद्यालयों में अध्ययनरत रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. के 66 छात्र–छात्राओं से शोधकर्ता द्वारा स्वयं उपस्थित होकर व्यक्तित्व का मापन करने के डॉ, यशवीरसिंह और डॉ. हरमोहनसिंह द्वारा निर्मित व्यक्तित्व मापनी का प्रशासन करके प्रदत्तों का संकलन किया गया। प्रयुक्त मापनी की विश्वसनीयता .80 तथा

वैद्यता .54 है। प्रदत्तविश्लेषणार्थ प्रकृत शोध में मध्यमान, मानकविचलन और टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तपरीक्षण से प्राप्त सांख्यिकीय निष्कर्ष अधोरचित तालिका में प्रस्तुत किये गये हैं।

प्राक्कल्पना परीक्षण

प्राक्कल्पना–1

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्र–छात्राओं के अंतर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु दो समूह हैं – राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राएं और गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राएं । राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं का प्रतिदर्श 33, मध्यमान 23.66, मानक विचलन 5.21 और गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं का प्रतिदर्श 33, मध्यमान 25.39, मानक विचलन5. 38 हैं । यहाँ मानक त्रुटि 6.54 है ।

तालिका 1

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्र–छात्राओं के अंतर्मुखी व्यक्तित्व का विवरण

	समूह	N	M	SD	D	मानकत्रुटि	टी–मूल्य
अंतर्मुखी व्यक्तित्व	रा.से.यो.छात्र–छात्रायें	33	23.66	5.21	1.73	6.54	0.26
	गैर– रा.से.यो. छात्र– छात्रायें	33	25.39	5.38			

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी–मूल्य (0.26), 0.05 सार्थकता स्तर (2.00) से कम है । अतः उपर्युक्त प्राक्कल्पना स्वीकृत की जाती है ।

प्राक्कल्पना –2

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्र–छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु दो समूह हैं – राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राएं ,वं गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राएं । राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं का प्रतिदर्श 33, मध्यमान 29.33, मानक विचलन 4.25 और गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं का प्रतिदर्श 33, मध्यमान 24.79, मानक विचलन 5.38 हैं । यहाँ मानक त्रुटि 1.91 है ।

तालिका 2

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्र–छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विवरण

	समूह	N	M	SD	D	मानकत्रुटि	टी–मूल्य
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	रा.से.यो.छात्र– छात्राएं	33	29.33	4.25	1.13	1.91	0.94
	गैर– रा.से.यो. छात्र– छात्राएं	33	24.79	5.38			

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी–मूल्य (0.94), 0.05 सार्थकता स्तर (2.00) से कम है । अतः उपर्युक्त प्राक्कल्पना स्वीकृत की जाती है ।

प्राक्कल्पना –3

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्रों के अंतर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु दो समूह हैं – राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र ,व गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र । राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों का प्रतिदर्श 15, मध्यमान 22.73, मानक विचलन 3.87 हैं । गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों का प्रतिदर्श15, मध्यमान 25.13, मानक विचलन 4.89 हैं । यहाँ मानक त्रुटि 0.99 है ।

तालिका 3

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्रों के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का विवरण

	समूह	N	M	SD	D	मानकत्रुटि	टी–मूल्य
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	रा.से.यो.छात्र	15	22.73	3.87	1.02	0.99	1.03
	गैर– रा.से.यो. छात्र	15	25.13	4.89			

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी–मूल्य (1.03), 0.05 सार्थकता स्तर (2.04) से कम है । अतः उपर्युक्त प्राक्कल्पना स्वीकृत की जाती है ।

प्राक्कल्पना –4

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु दो समूह हैं – राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र ,व गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र । राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों का प्रतिदर्श 15, मध्यमान 29.2, मानक विचलन 3.65 और गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों का प्रतिदर्श 15, मध्यमान 26.13, मानक विचलन 5.79 हैं । यहाँ मानक त्रुटि 0.94 है ।

तालिका 4

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विवरण

	समूह	N	M	SD	D	मानकत्रुटि	टी–मूल्य
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	रा.से.यो. छात्र	15	29.2	3.65	2.14	0.94	2.27
	गैर– रा.से.यो.छात्र	15	26.13	5.79			

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी–मूल्य (2.27), 0.05 सार्थकता स्तर (2.04) से ज्याादा है । अतः उपर्युक्त प्राक्कल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

प्राक्कल्पना –5

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्राओं के अंतर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु दो समूह हैं – राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राएं और गैर राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राएं । राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राओं का प्रतिदर्श 18, मध्यमान 24.44, मानक विचलन 6.00 और गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राओं का प्रतिदर्श 18, मध्यमान 25.01, मानक विचलन 5.74 हैं । यहाँ मानक त्रुटि 1.8 है ।

तालिका 5

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का विवरण

	समूह	N	M	SD	D	मानकत्रुटि	टी–मूल्य
अन्तर्मुखी व्यक्तित्व	रा.से.यो. छात्राएं	18	24.44	6.00	0.26	1.8	0.14
	गैर–रा.से.यो. छात्राएं	18	25.61	5.74			

उक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी–मूल्य (0.14), 0.05 सार्थकता स्तर (2.04) से कम है । अतः उपर्युक्त प्राक्कल्पना स्वीकृत की जाती है ।

प्राक्कल्पना –6

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो. छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु दो समूह हैं – राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राएं ,व गैर राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राएं । राष्ट्रीय सेवा योजना छात्राओं का प्रतिदर्श 18, मध्यमान 29.44, मानक विचलन 4.69 और गैर–राष्ट्रीय सेवा योजना छात्र–छात्राओं का प्रतिदर्श 18, मध्यमान 23.66, मानक विचलन 4.72 हैं । यहाँ मानक त्रुटि 1.75 है ।

तालिका 6

महाविद्यालयीन रा.से.यो. और गैर– रा.से.यो.छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विवरण

	समूह	N	M	SD	D	मानकत्रुटि	टी–मूल्य
बहिर्मुखी व्यक्तित्व	रा.से.यो. छात्राएं	18	29.44	4.69	0.03	1.75	0.01
	गैर–रा.से.यो. छात्राएं	18	23.66	4.72			

डक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राप्त टी–मूल्य (0.01), 0.05 सार्थकता स्तर (2..04) से कम है । अतः उपर्युक्त प्राक्कल्पना स्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष –

उपरोक्त प्रकल्पनाओं के परीक्षण से ज्ञात होता है कि रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो.छात्र–छात्राओं के अन्तर्मुखीं एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व में सामान्य अवलोकन से तो अन्तर दिखाई पड़ता है परन्तु सांख्यिीकीय दृष्टी से कोई सार्थक अन्तर नजर नहीं आता। प्राक्काल्पानाओं के परीक्षण से ज्ञात होता है कि–

1. रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्र –छात्राओं के अन्तर्मुखीं व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्र–छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्रों के अन्तर्मुखीं व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. रा.से.यो.एवं गैर रा.से.यो.छात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर है।
5. रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो.छात्राओं के अन्तर्मुखीं व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो. छात्राओं के बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निहितार्थ– प्रकृत शोध व्यक्तित्व आधारित है जिसमें प्रमापीकृत व्यक्तित्व मापनी के द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व के अन्तर्मुखी बहिर्मुखी शील गुणों का मापन किया गया। उपर्युक्त शोध में प्राक्कल्पनओं के परीक्षण से यह ज्ञात हुआ की रा.से.यो. एवं गैर रा.से.यो.के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व में अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ जिससे यह निहितार्थ सामने आता है कि व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय दिक् काल के समय से है जिस पर वंश और वातावरण का प्रभाव स्वाभाविक रूप से पड़ता है। अतः मानव जीवन में व्यक्ति के सुदृढ़ व्यक्तित्व निर्माण हेतु उसके आसपास के लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया जाना आवश्यक है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. गुप्ता,एस.पी., (2011), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तंक सदन, इलाहाबाद।
2. सिहं, अरूण कुमार, (2014), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
3. श्री निवास, डा. बी. पद्ममिश्र (2012), शिक्षायाः मनोविज्ञानिकाधाराः, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
4. शर्मा,रचना,शर्मा रामनाथ (2005), भारतीय मनोविज्ञान, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
5. श्रीवास्तव, डा.डी.एन. (2014), सांख्यिकी एवं मापन, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
6. भारतीय शिक्षामनोविज्ञान, शिक्षा शास्त्र विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर।
7. जैन, राजीव,(2016), सभी के लिए योगासन एवं प्राणायाम, मंजुल पब्लिशिंग हाऊस, भोपाल।
8. श्रीमद् भगवद्गीता (2014), भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट मुम्बई।
9. विद्यार्थी कार्य डायरी, राष्ट्रीय सेवा योजना, बरकतउल्ला विश्वाविद्यालय भोपाल।
10- www.nss.gov.in
11- www.scotbuzz.org
12- www.shodhganga.Inflibnet.ac.in